

सीयूके बुलेटिन

गर्व का दिवस: सीयूके ने 9वां दीक्षांत समारोह मनाया





2 अक्टूबर 2014 को गांधी जयंती के अवसर पर, हमारे माननीय प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने एक राष्ट्रव्यापी अभियान, स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया। स्वच्छ और स्वस्थ भारत के महात्मा गांधी के दृष्टिकोण से प्रेरणा लेते हुए, इस अभियान का उद्देश्य स्वच्छता को बढ़ावा देना, खुले में शौच को खत्म करना, स्वच्छता को बढ़ावा देना, अपशिष्ट प्रबंधन में सुधार करना और भारतीय नागरिकों के बीच नागरिक जिम्मेदारी पैदा करना है।

स्वच्छ भारत पहल न केवल स्वच्छता पर जोर देती है, बल्कि जिम्मेदारी की मानसिकता, पर्यावरण के प्रति सम्मान और सार्वजनिक स्थानों को भी बढ़ावा देती है, जिसके परिणामस्वरूप सार्वजनिक स्वास्थ्य पर काफी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के सदस्यों के रूप में, हम एक स्वच्छ परिसर, सतत अपशिष्ट प्रबंधन, जल संरक्षण और प्लास्टिक के उपयोग में कमी को बढ़ावा देते हैं। कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय न केवल सीखने का स्थान है, बल्कि एक ऐसा स्थान भी है जहां छात्र पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी की भावना विकसित करते हैं और अच्छी आदतों को अपनाकर जिम्मेदार नागरिक बन जाते हैं। एक स्वच्छ वातावरण सीखने के लिए एक स्वस्थ वातावरण बनाता है और छात्रों के मानसिक और शारीरिक विकास का समर्थन करता है।

हालांकि, स्वच्छ भारत अभियान एक दिवसीय गतिविधि नहीं है, बल्कि एक दीर्घकालिक आंदोलन है जिसके लिए हमारे नागरिकों के सामूहिक प्रयास की आवश्यकता होती है। सीयूके परिसर के भीतर, इसकी सफलता हमारे विश्वविद्यालय के छात्रों, शिक्षकों, प्रशासकों और कर्मचारियों की सामूहिक भागीदारी पर निर्भर करती है। इस तरह हम एक स्वच्छ और सशक्त भारत के विजन को पूरा कर सकते हैं जिसकी महात्मा गांधी ने एक बार कल्पना की थी।

आइए हम मिलकर अपने परिसर को साफ-सुथरा और हरा-भरा रखने का संकल्प लें। जय हिन्द। जय भारत।

प्रो. बट्टू सत्यनारायण
कुलपति
कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कलबुर्गी



हमारी भूमि, वन और प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र केवल संसाधन नहीं हैं; वे जीवन की नींव हैं। बहुत पहले, स्वदेशी समुदायों ने इस सच्चाई को समझा और प्राकृतिक दुनिया के साथ देखभाल और जिम्मेदारी के साथ व्यवहार किया। इस ज्ञान को प्रतिध्वनित करने वाली सबसे मजबूत आवाजों में से एक प्रसिद्ध आदिवासी नेता बिरसा मुंडा की थी, जिनके विचार आज भी उल्लेखनीय हैं।

मुंडा आदिवासी समुदाय में जन्मे बिरसा मुंडा का मानना था कि भूमि और वन पवित्र हैं और लोगों के जीवन, संस्कृति और गरिमा का अभिन्न अंग हैं। औपनिवेशिक काल में, लगाए गए शोषणकारी भूमि प्रणालियों और असीमित वनों की कटाई के कारण, आदिवासी लोग विस्थापित हो गए, और नाजुक पारिस्थितिक तंत्र नष्ट हो गए। इस तरह बिरसा मुंडा का संघर्ष न सिर्फ आदिवासी अधिकारों के लिए लड़ाई थी, बल्कि प्राकृतिक पर्यावरण को नष्ट होने से बचाने के लिए भी एक आवाज़ थी। वह जानता था कि जंगलों के बिना उनकी पहचान और आजीविका भी खतरे में होगी।

आज, दुनिया की वर्तमान पारिस्थितिक स्थिति चिंताजनक है। वास्तव में, एफएओ ग्लोबल फॉरेस्ट रिसोर्सेज असेसमेंट 2025 के अनुसार, दुनिया भर में लगभग 489 मिलियन हेक्टेयर वन 1990 और 2025 के बीच गायब हो गए। हालांकि जंगल काटने की दर 1990 और 2000 के बीच 17.6 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष से घटकर 2015 और 2025 के बीच 10.9 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष हो गई है, लेकिन इसका पैमाना अभी भी बहुत चिंताजनक है।

जंगलों और समुदाय को बचाने के उनके निरंतर प्रयासों के माध्यम से, बिरसा मुंडा के जीवन ने हमें सिखाया, प्रकृति की कीमत पर वास्तविक विकास नहीं हो सका। उनकी दृष्टि हमें सिखाती है कि पारिस्थितिक संतुलन और टिकाऊ जीवन गहराई से जुड़े हुए हैं। जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय गिरावट से चिह्नित युग में, इस स्वदेशी ज्ञान का महत्वपूर्ण मूल्य होता है।

हमारे छात्रों के लिए संदेश तत्काल है लेकिन सीधा है: बिरसा मुंडा का जीवन हमें प्रकृति के जिम्मेदार एजेंट बनना सिखाता है। पेड़ों को बचाने, कचरे को कम करने और पर्यावरण का सम्मान करने जैसे छोटे कदमों के माध्यम से, हम सामूहिक रूप से एक हरित, अधिक टिकाऊ भविष्य की ओर काम कर सकते हैं।

प्रो. आर. आर. बिरादार
कुलसचिव
कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कलबुर्गी

निवेशक जागरूकता कार्यक्रम ने सीयूके में छात्रों को प्रबुद्ध किया



1 सितंबर, 2025: सीयूके ने “वेल्थ वाइज: स्मार्ट मूव्स फॉर यंग इन्वेस्टर्स” नामक एक दिवसीय निवेशक जागरूकता कार्यक्रम की मेजबानी की, जिसमें स्कूल ऑफ बिजनेस स्टडीज के छात्रों की उत्साहपूर्ण भागीदारी को आकर्षित किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए, सीयूके के कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने प्रारंभिक वित्तीय साक्षरता के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने छात्रों से यह समझने का आग्रह करते हुए कहा कि निवेश के विभिन्न रास्ते जानना धन सृजन के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि सोना, भूमि, आवास, म्यूचुअल फंड और अन्य संपत्ति जैसे रास्ते दीर्घकालिक धन के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। “हो सकता है कि आप अब निवेश करना शुरू न करें, लेकिन यह सीखने का सही समय है। छोटी शुरुआत करें, समय के साथ यह बड़ा हो जाता है” उन्होंने सलाह दी। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि कैसे आर्थिक रूप से जागरूक युवा किसी देश की आर्थिक प्रगति में योगदान करते हैं।

कार्यक्रम के संसाधन व्यक्ति, एमआईटी वर्ल्ड पीस यूनिवर्सिटी, पुणे के डॉ. कुणाल गौरव ने वित्तीय स्वतंत्रता पर एक अंतर्दृष्टि सत्र दिया। उन्होंने तीन मुख्य सिद्धांत साझा किए: “अपने आप में, अपने कौशल और ज्ञान में निवेश करें।

पहले अपने आप को भुगतान करें, अपना भविष्य सुरक्षित रखें। और याद रखें, अकेले बचत करना पर्याप्त नहीं है; जैसे ही आप कमाई शुरू करते हैं, निवेश करना शुरू करें।” उन्होंने छात्रों को निवेश के विविध अवसरों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रो.पांडुरंगा वी पत्ती, डीन, स्कूल ऑफ बिजनेस स्टडीज, ने शिक्षार्थियों को अनुशासित आदतों की खेती करने की सलाह देकर प्रेरित किया: “अपनी जेब का कम से कम आधा पैसा सार्थक संपत्ति में निवेश करें।”

इस कार्यक्रम की शुरुआत बिजनेस स्टडीज विभाग के अध्यक्ष डॉ. मोहम्मद जोहेर के स्वागत भाषण से हुई। पर्यटन विभाग के अध्यक्ष डॉ. महेंदर ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। श्री सैयद साहिल इकबाल और परोमित रॉय के राष्ट्रीय गीत और डॉ. जयदेवी जंगमशेट्टी के राष्ट्रीय गान के साथ सुचारू समन्वय ने इस अवसर पर शोभा बढ़ाई।

कार्यक्रम समन्वयक डॉ. शैलजा कोनेक ने कई संकाय सदस्यों और एक फुरतीले छात्र दर्शकों के साथ इस कार्यक्रम की सफलता में योगदान दिया, जिसने सूचित वित्तीय योजना और निवेश रणनीतियों के लिए नए उत्साह के साथ निष्कर्ष निकाला।

भविष्य के लिए शावक पौधे हरित चेतना और आदिवासी गौरव की ओर एक कदम



1 सितंबर, 2025: भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती और जन जातीय गौरव वर्ष-2025 के पालन के लिए एक शक्तिशाली श्रद्धांजलि में, सीयूके ने एक सार्थक वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया जिसने संकाय और छात्रों को हरित भविष्य के लिए सामूहिक प्रतिज्ञा में एक साथ लाया।

माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने एक पौधा लगाकर पर्यावरण की जिम्मेदारी के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। सभा को संबोधित करते हुए, उन्होंने भगवान बिरसा मुंडा के असाधारण योगदान पर विचार किया, उन्हें आदिवासी समुदायों के उत्थान के प्रति साहस, बलिदान और अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक बताया। उन्होंने जोर देकर कहा कि ऐसे नेताओं को याद करने से भारत के समृद्ध सामाजिक ताने-बाने की हमारी समझ मजबूत होती है। प्रो. सत्यनारायण ने पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में पेड़ों की अपरिहार्य भूमिका पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि पौधे लगाने जैसे सरल कार्यों का दीर्घकालिक सकारात्मक प्रभाव हो सकता है, वायु गुणवत्ता में सुधार हो सकता है, मिट्टी को समृद्ध कर सकता है, जैव विविधता

का संरक्षण कर सकता है और जलवायु लचीलेपन में योगदान दे सकता है। उन्होंने प्रतिभागियों को याद दिलाते हुए कहा, "आज लगाया गया एक पेड़ भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक उपहार बन जाता है।"

कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. गुरु बागेवाड़ी के स्वागत भाषण के साथ हुई, जिसके बाद डॉ. डी. गौतम ने आभार व्यक्त किया, जिन्होंने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। प्रो. जी. आर. अंगडी, डॉ. महेन्द्र जी., डॉ. जगदीश बिरादार, डॉ. अशालता एस., और डॉ. आर. बी. बोनाल सहित विशिष्ट संकाय सदस्यों की उपस्थिति ने इस अवसर को महत्व दिया।

वृक्षारोपण अभियान न केवल एक पर्यावरणीय गतिविधि के रूप में समाप्त हुआ, बल्कि न्याय और गरिमा के लिए लड़ने वाले नेताओं की विरासत को संजोते हुए पृथ्वी को पोषित करने की सामूहिक जिम्मेदारी की याद दिलाता है। कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय में लगाए गए पौधे आज एक समृद्ध कल की खोज में आशा के जीवित प्रतीकों के रूप में खड़े हैं।



ENVIRONMENT

सीयूके अपने शिक्षकों का सम्मान करता है



4 सितंबर, 2025: सीयूके ने हार्दिक श्रद्धांजलि, प्रेरक संदेशों और संकाय उपलब्धियों की मान्यता के साथ शिक्षक दिवस मनाया। इस कार्यक्रम ने पूरे विश्वविद्यालय के शिक्षकों को एक साथ लाया, जो भारतीय संस्कृति में गहराई से निहित कृतज्ञता की भावना को दर्शाता है।

माननीय कुलपति प्रो. बट्ट सत्यनारायण ने शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देकर उत्सव की शुरुआत की। उन्होंने कहा, “शिक्षक राष्ट्र निर्माता हैं,” उन्होंने इस बात पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कैसे प्रत्येक शिक्षक - प्राथमिक विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक छात्रों, समाज और राष्ट्र को आकार देने में योगदान देता है। उन्होंने गर्व से घोषणा की कि सीयूके ने एनआईआरएफ 2023-24 रैंकिंग में 150-200 रैंज हासिल की, इस उपलब्धि को शिक्षण समुदाय के समर्पण के लिए श्रेय दिया। उन्होंने संकाय को और भी अधिक उत्कृष्टता के लिए प्रयास, अनुसंधान और बुनियादी सुविधाओं का प्रभावी उपयोग करने, पूर्व छात्रों के नेटवर्क को मजबूत करने और मजबूत उद्योग-शैक्षणिक सहयोग बनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने अपने संबोधन में शिक्षकों को मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में वर्णित किया जो युवाओं को बदलते हैं और विकसित भारत में योगदान देते हैं। आध्यात्मिक प्रतीकों का हवाला देते हुए, उन्होंने कहा कि एक शिक्षक में ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर के गुण होते हैं, जो अज्ञान के निर्माता, संरक्षक और विनाशक हैं। “गुरु भगवान से कहीं अधिक हैं” उन्होंने कबीर दास को

उद्धृत किया, शिक्षकों को उन गुणों की याद दिलाते हुए जिन्हें उन्हें बनाए रखना चाहिए। अनुसंधान और विकास निदेशक प्रो. एन. सत्यनारायण ने ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के मॉडल के रूप में शिक्षक की भूमिका पर विचार किया, सामाजिक अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए निरंतर आत्मनिरीक्षण का आग्रह किया।

इस कार्यक्रम ने विशिष्ट संकाय को भी सम्मानित किया: प्रो. शेषनाथ भोसले, डॉ. संजीत सरकार, और डॉ. नृसिंघा चरण प्रधान को उनके शोध प्रकाशनों के लिए; डॉ. रोहिनाक्ष श्रीलारू, प्रो. एम ए असलम, डॉ. बाबू एन, डॉ. जयदेवी जंगमशेट्टी और डॉ. राघवेंद्र बोनल को पुस्तक प्रकाशनों के लिए; और पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं डॉ. पी एस कट्टीमणि और डॉ. जयदेवी जंगमशेट्टी को पुरस्कृत किया।

कार्यक्रम समन्वयक प्रो. आर. एस. हेगड़ी ने सभा का स्वागत किया, जबकि डॉ. राजीव जोशी ने संचालन किया और धन्यवाद ज्ञापन दिया। राष्ट्रीय गीत और गान डॉ. जयदेवी जंगमशेट्टी, डॉ. रवि किरण नाकोड़ और डॉ. स्वपनील चाफेकर द्वारा प्रस्तुत किया गया था। उत्सव का समापन प्रतिबद्धता की एक नई भावना के साथ हुआ, जिसमें सीयूके के प्रत्येक शिक्षक को याद दिलाया गया कि उनका प्रभाव कक्षाओं से कहीं आगे तक फैला हुआ है, जो एक समय में राष्ट्र को एक शिक्षार्थी बनाते हैं।

सीयूके ने भारत की महिला योद्धाओं के साहस का जश्न मनाया।

11 सितंबर, 2025: सीयूके प्रेरणा और देशभक्ति के गौरव के साथ जीवित आया क्योंकि इसने “ भरतवर्ष की महिला योद्धाओं के अदम्य साहस और सशक्तिकरण का जश्न” नामक एक संगोष्ठी की मेजबानी की। आईक्यूएसी के सहयोग से एबीआरएसएम-सीयूके यूनिट द्वारा आयोजित, इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारत की ऐतिहासिक महिला योद्धाओं की विरासत को फिर से जगाना है, जिनकी बहादुरी पीढ़ियों को प्रेरित करना जारी रखती है।

सत्र का उद्घाटन करते हुए, माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने इन नायिकाओं को याद करने की प्रासंगिकता पर जोर दिया। उन्होंने छात्रों और संकाय से आधुनिक भारत को आकार देने वाले ऐतिहासिक संघर्षों पर फिर से विचार करने का आग्रह करते हुए कहा, “हमें भारत की महान महिला योद्धाओं के बलिदान से कई सबक सीखने होंगे। उन्होंने किन्नूर रानी चेन्नम्मा, रानी अब्बक्का चौटा और अहिल्यादेवी होल्कर की वीरता पर प्रकाश डाला, उन्हें साहस और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बताया। विकास भारत 2047 की दिशा में भारत की यात्रा के समानांतर खींचते हुए, उन्होंने जोर देकर कहा कि सच्ची प्रगति के लिए हमारे अतीत को समझने और आत्मनिर्भर भारत की भावना को मूर्त रूप देने की आवश्यकता है। मुख्य वक्ता प्रो. पवित्रा आर. अलूर ने महिला योद्धाओं के असाधारण योगदान पर प्रकाश डालते हुए एक प्रेरणादायक संबोधन दिया। उन्होंने कहा कि किन्नूर रानी चेन्नम्मा, जिसे व्यापक रूप से भारत की पहली महिला स्वतंत्रता सेनानी माना जाता है, ने 1824 में ब्रिटिश शासन का बहादुरी से विरोध किया, यहां तक कि अधिकारी ठाकरे को हराया और मार डाला। उन्होंने उल्लाल की रानी अब्बाका चौटा और इंदौर की अहिल्यादेवी होल्कर की वीरता पर भी जोर दिया, जिन्होंने भारतीय संस्कृति और परंपरा को संरक्षित करते हुए बाहरी और आंतरिक खतरों के खिलाफ लगातार लड़ाई लड़ी।

उन्होंने कहा, “ये रानियां कालातीत रोल मॉडल हैं, खासकर उन महिलाओं के



लिए जो अनुग्रह के साथ प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करती हैं। इस कार्यक्रम में एबीआरएसएम-सीयूके यूनिट के अध्यक्ष प्रो. चन्नवीर आरएम, आईक्यूएसी के निदेशक प्रो. एम. अमरेंद्र, ओरागुंटी अंजनेयालू, डॉ. अखिलेश मिश्रा, संकाय सदस्यों और छात्रों ने भाग लिया। संगोष्ठी का समापन एक शक्तिशाली अनुस्मारक के साथ हुआ: भारत की महिला योद्धाओं का साहस केवल इतिहास नहीं है; यह एक जीवित विरासत है जो आज की पीढ़ी को लगातार प्रेरित करती है।

सीयूके ने शुरू किया सॉफ्ट स्किल्स सेंटर

11 सितंबर, 2025: सीयूके ने विश्वविद्यालय के पहले सॉफ्ट स्किल्स रेंनिंग प्रोग्राम के साथ-साथ अपने सॉफ्ट स्किल्स डेवलपमेंट सेंटर के उद्घाटन के साथ समग्र छात्र विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया, जिसमें छात्रों और संकाय की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी गई। माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने छात्रों से मूल्यों में निहित चरित्र का निर्माण करने का आग्रह किया।



“उन्होंने कहा, “धर्मराज जैसे व्यक्तित्व का विकास करें, दुर्योधन नहीं,” उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सच्चा व्यक्तित्व संचार, नेतृत्व, टीम वर्क, सहानुभूति, रचनात्मकता और अनुकूलन क्षमता जैसे नरम कौशल के माध्यम से चमकता है। उन्होंने छात्रों को केंद्र के कार्यक्रमों का पूरा उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। सम्मानित अतिथि प्रो. भीमराव भोसले ने एनईपी 2020 के संदर्भ में नरम कौशल के बढ़ते महत्व पर प्रकाश डाला, यह देखते हुए कि आधुनिक चुनौतियों के लिए रचनात्मक और भावनात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा, “नरम कौशल में संचार, शारीरिक भाषा, मनोवैज्ञानिक जागरूकता और व्यवहार संबंधी क्षमताएं शामिल हैं। डीन प्रो. पांडुरंगा पट्टी ने कहा, “नरम कौशल पैकेजिंग की तरह हैं - अच्छी पैकेजिंग ध्यान आकर्षित करती है, और एक मजबूत व्यक्तित्व दरवाजे खोलता है। निदेशक डॉ. सुषमा ने इस पहल को छात्र परिवर्तन के लिए एक महत्वपूर्ण कदम बताते हुए उपस्थित लोगों का स्वागत किया और कर्मचारियों, उद्योगों और जनता को प्रशिक्षण देने की योजना साझा की। डॉ. कविता संगोलागी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ डॉ. सफिया परवीन ने कार्यक्रम का संचालन किया डाला। इस कार्यक्रम में डॉ. मोहम्मद जोहेर, डॉ. गणपति बी. सिन्नूर, प्रो. के. पद्मश्री और अन्य सहित संकाय सदस्यों ने भाग लिया।

कल के नेताओं को तैयार करना: सीयूके में जीवन कौशल प्रशिक्षण शुरू किया गया

15 सितंबर, 2025: सीयूके ने एक परिवर्तनकारी 10-दिवसीय जीवन कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया, जो छात्रों विशेष रूप से इच्छुक सामाजिक कार्य पेशवरों को आवश्यक व्यक्तिगत और व्यवसायी दक्षताओं से लैस करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। सामाजिक कार्य विभाग द्वारा आयोजित, कार्यक्रम ने अपने जीवन कौशल को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध एमएसडब्ल्यू छात्रों की उत्साहपूर्ण भागीदारी को आकर्षित किया।

माननीय कुलपति प्रो. भट्ट सत्यनारायण ने अपने उद्घाटन भाषण में आज की तेजी से बदलती दुनिया में जीवन कौशल की बढ़ती आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा, “वर्तमान जटिल दुनिया में जीवन कौशल बहुत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने इस बात पर विचार किया कि कैसे पारंपरिक पारिवारिक संरचनाओं ने एक बार सुरक्षा की पेशकश की थी, जबकि आधुनिकीकरण और परमाणु परिवारों ने अधिक जोखिम और चुनौतियां पेश की हैं।

उन्होंने सामाजिक मुद्दों के समाधान में सामाजिक कार्य के छात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला।



उन्होंने आग्रह किया “वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने के लिए यहां प्राप्त ज्ञान का उपयोग करें। ग्रामीण समुदायों के लिए जीवन कौशल प्रशिक्षक बनें,”। सामाजिक कार्य विभाग के प्रमुख प्रो. पवित्रा आर. अलूर ने इस पहल को एक प्रशिक्षक कार्यक्रम के रूप में वर्णित किया, जिसका उद्देश्य तनाव प्रबंधन, प्रभावी संचार, निर्णय लेने, रचनात्मक सोच, आत्म-जागरूकता, पारस्परिक संबंध और सहानुभूति जैसे कौशल विकसित करना है। भविष्य में किशोरों को प्रशिक्षित करने के लिए एमएसडब्ल्यू छात्रों को तैयार करना। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. चितकला वेंकारेड्डी ने सभा का स्वागत किया और सत्रों की कार्यप्रणाली और संरचना के बारे में बताया। उन्होंने जोर देकर कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य व्यक्तियों को सशक्त बनाना, आत्मविश्वास पैदा करना और छात्रों को चुनौतियों का समाधान करने की क्षमता से लैस करना है, जबकि दूसरों को भी ऐसा करने में मदद करना है। छात्रों को जीवन कौशल प्रशिक्षण मॉड्यूल वितरित किए गए। प्रो. चन्नवीर आरएम, डॉ. लक्ष्मण, डॉ. शिवमूर्ति, डॉ. श्रीनिवास, डॉ. हरीश और डॉ. भाग्यश्री संकाय और छात्रों के साथ उपस्थित थे।

सीयूके ने सामूहिक स्वच्छता के आह्वान के साथ स्वच्छ उत्सव 2025 का शुभारंभ किया

18 सितंबर, 2025: सीयूके ने पर्यावरण की जिम्मेदारी और टिकाऊ जीवन के एक मजबूत संदेश के साथ स्वच्छ उत्सव 2025 का उद्घाटन किया। भारत सरकार के स्वच्छ भारत मिशन के तहत 17 सितंबर से दो अक्टूबर तक मनाए गए पखवाड़े भर चलने वाले स्वच्छता अभियान की शुरुआत माननीय कुलपति प्रो. भट्ट सत्यनारायण के प्रेरणादायक संबोधन के साथ हुई। उन्होंने विश्वविद्यालय समुदाय से प्रकृति को बचाने में सक्रिय कदम उठाने का आग्रह किया। उन्होंने प्रतिभागियों को याद दिलाया कि प्रदूषण से होने वाली बीमारियां सामूहिक लापरवाही के कारण बढ़ रही हैं, इसलिए हमें प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी से व्यवहार करना चाहिए और भविष्य की पीढ़ियों के लिए इसकी रक्षा करनी चाहिए। उन्होंने सभी से घरों, सड़कों, छात्रावासों, कार्यालयों और परिसर जैसे अपने परिवेश को स्वच्छ और स्वास्थ्यकर रखने की अपील की, चेतावनी दी कि आज कार्य करने में विफल रहने से भविष्य की पीढ़ियों को स्वच्छ पानी और हवा जैसी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए भारी कीमत चुकाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। मुख्य अतिथि प्रो. चन्नवीर आर एम ने स्वच्छता की नैतिक और सांस्कृतिक जड़ों पर विचार करते हुए इसी भावना को दोहराया। बसवेश्वर की शिक्षाओं का हवाला देते हुए उन्होंने आंतरिक और बाहरी दोनों तरह के पवित्रता पर जोर दिया। “स्वच्छता ईश्वरत्व के बगल में है। इसे हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बनना चाहिए, और इसके लिए हमें दृष्टिकोण परिवर्तन की आवश्यकता है।



उन्होंने खुले में शौच से मुक्त भारत को प्राप्त करने और बनाए रखने में सार्वजनिक सहयोग की भूमिका पर जोर दिया। परिसर विकास के निदेशक प्रो. वीरेश कसबेगौड़ ने भारत के कम वृक्ष-प्रति-व्यक्ति अनुपात पर प्रकाश डाला और परिसर को हरा-भरा रखने के लिए निरंतर प्रयासों को प्रोत्साहित किया। सीयूके के स्वच्छ भारत मिशन के नोडल अधिकारी डॉ. जगदीश बिरादार ने प्रतिभागियों को श्रमदान, स्वच्छता अभियान, अपशिष्ट से धन प्रदर्शनी, जागरूकता कार्यक्रम, रैली, कार्यशालाएं और वृक्षारोपण अभियान सहित नियोजित गतिविधियों की विस्तृत श्रृंखला के बारे में जानकारी दी। इस कार्यक्रम में ‘सेल्फी बूथ’ हस्ताक्षर अभियान का उद्घाटन भी किया गया।

अभियांत्रिकीोत्सव 2के25: CUK में नवाचार और प्रेरणा का एक सप्ताह

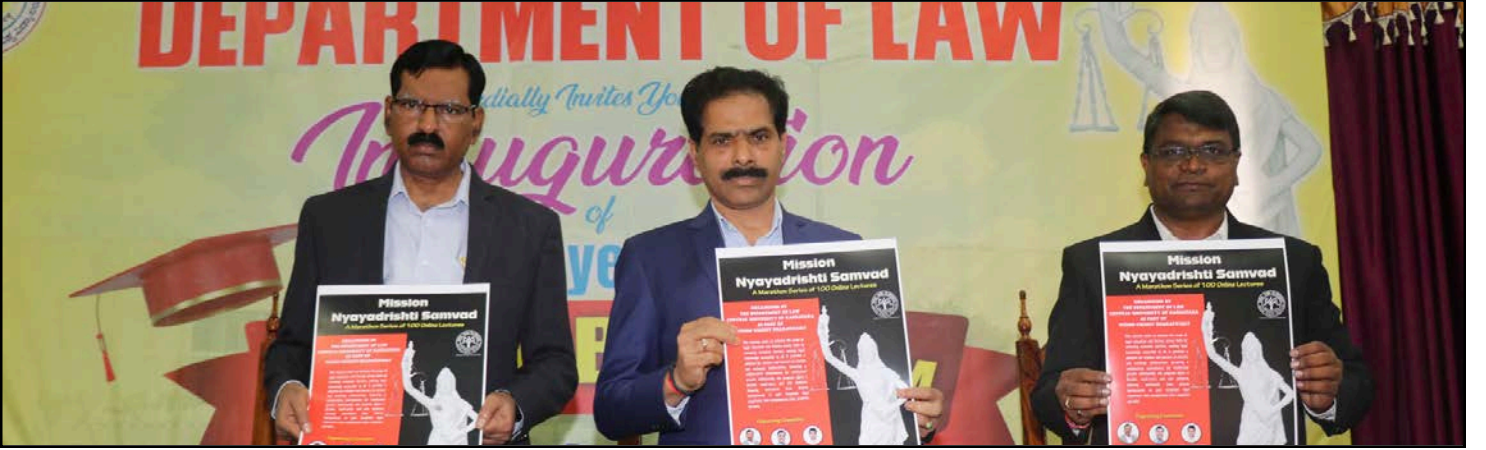
सितंबर 20, 2025: सीयूके में सप्ताह भर चलने वाले अभियांत्रिकीोत्सव 2के25 का समापन नवाचार, उत्कृष्टता और समाज की सेवा के लिए एक प्रेरणादायक आह्वान के साथ हुआ। समापन समारोह, जो 19 सितंबर को आयोजित किया गया था, ने प्रौद्योगिकी, रचनात्मकता और युवा ऊर्जा के जीवंत संलयन का जश्न मनाया, जिसमें पूरे क्षेत्र से इंजीनियरिंग छात्रों, शिक्षकों और स्कूली बच्चों की भागीदारी देखी गई। माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने अपने विदाई भाषण में उभरते इंजीनियरों से महान सर एम विश्वेश्वरैया से प्रेरणा लेने का आग्रह किया, जिनकी बांध और पुलों से लेकर बाढ़ सुरक्षा प्रणालियों और औद्योगिक संस्थानों तक की दूरदर्शी इंजीनियरिंग ने आधुनिक भारत की नींव रखी। “सर एम. विश्वेश्वरैया का उदाहरण लेकर दुनिया में चमत्कार पैदा करें। वह सभी इंजीनियरों के लिए एक रोल मॉडल है, “उन्होंने छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए सीयूके की उन्नत प्रयोगशालाओं का पूरा उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहा। उत्सव में एक वृक्षारोपण अभियान और ग्रीन रैली शामिल थी, जो स्थिरता के लिए सीयूके की प्रतिबद्धता की पुष्टि करती थी। एक परियोजना एक्सपोजे में अभिनव मॉडल दिखाए।

आईओटी आधारित होम ऑटोमेशन, एआई संचालित रोबोटिक आर्म्स, मोशन सेंसिंग वाहन, रेटिनल वेसल सेगमेंटेशन सिस्टम और आरएफआईडी डोर लॉकिंग



तंत्र दिखाए गए। ऑपरेशन सिंदूर प्रदर्शनी ने आईएनएस विक्रांत, राफेल, ब्रह्मोस, एस-400, अर्जुन टैंक और एमक्यू-9 की प्रतिकृतियों के साथ दर्शकों को और अधिक आकर्षित किया। हैकार्थन और कोडिंग क्विज जैसे कार्यक्रमों ने अन्य विश्वविद्यालयों के छात्रों की भागीदारी को आकर्षित किया, जिसमें उत्सव की सहयोगी भावना पर प्रकाश डाला गया। समारोह का समापन डीन प्रो. परमेश, वरिष्ठ संकाय सदस्यों और उत्साही छात्रों की उपस्थिति में हुआ।

सीयूके ने पांच वर्षीय बीए एलएलबी शुरू किया है।



25 सितंबर, 2025: सीयूके ने शैक्षणिक वर्ष 2025-26 के लिए बार काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा अनुमोदित अपने पांच साल के एकीकृत बीए एलएलबी कार्यक्रम के उद्घाटन के साथ एक ऐतिहासिक मील का पत्थर चिह्नित किया। उद्घाटन भाषण देते हुए, माननीय श्री न्यायमूर्ति एच.पी. कर्नाटक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश संदेश ने एक वकील को “दलितों के उत्थान और समाज को बदलने की महान जिम्मेदारी वाला एक सामाजिक इंजीनियर” बताया। उन्होंने नए छात्रों को याद दिलाया कि उन्हें जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे अंततः राष्ट्र, समुदाय और उनके परिवारों की सेवा करनी चाहिए।

न्यायमूर्ति संदेश ने छात्रों को कानूनी पेशे की चुनौतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हुए उनसे आग्रह किया कि वे इसकी मामूली शुरुआत से निराश न हों। “अन्य व्यवसायों के साथ अपनी तुलना न करें। नाम और प्रसिद्धि अर्जित करने के लिए कड़ी मेहनत करें, “उन्होंने गरिमा, अनुशासन और समर्पण पर जोर दिया। स्वामी विवेकानंद से प्रेरणा लेते हुए, उन्होंने छात्रों को अनुशासन, कड़ी मेहनत, समय अर्थ, आत्मविश्वास और साहस विकसित करने की सलाह दी, उन्हें हर सफल वकील के लिए आवश्यक लक्षण

कहा। उन्होंने “वकालत के सात लैंप” पर भी जोर दिया, जिसमें आठवें - चातुर्य को जोड़ने की सिफारिश की गई - छात्रों को याद दिलाया गया कि सच्ची पेशेवर संतुष्टि समाज के लिए सार्थक योगदान देने में निहित है। अपने अध्यक्षीय भाषण में, माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने रेखांकित किया कि ईमानदारी कानूनी अभ्यास की नींव बनाती है। उन्होंने कहा, “एक ग्राहक न्याय की उम्मीद के साथ एक वकील से संपर्क करता है। ईमानदारी के साथ काम करें और सफलता मिलेगी।” उन्होंने छात्रों को सीयूके के फुरतीले शैक्षणिक वातावरण और समृद्ध संसाधनों का उपयोग करके पेशेवर उत्कृष्टता और नैतिक जिम्मेदारी विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

लॉन्च के हिस्से के रूप में, कानून विभाग ने विजन विकसित भारत @ 2047 के तहत गुणवत्तापूर्ण कानूनी शिक्षा तक पहुंच का विस्तार करने के उद्देश्य से 100 ऑनलाइन व्याख्यान की एक मैराथन मिशन न्यायदृष्टि संवाद शुरू किया।

स्वस्थ महिलाएं, मजबूत राष्ट्र: ब्रिटेन की स्वस्थ नारी कार्यक्रम परिवर्तन को प्रेरित करता है।



25 सितंबर, 2025: सीयूके ने “स्वस्थ नारी: सशक्त परिवार” नामक एक प्रभावशाली कार्यक्रम की मेजबानी की, जिसमें इस बात पर जोर दिया गया कि महिलाओं का स्वास्थ्य केवल व्यक्तिगत चिंता नहीं है बल्कि मजबूत परिवारों और प्रगतिशील राष्ट्र के लिए आधार है। माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने अपने संबोधन में शिक्षा और सहायक सरकारी पहलों के माध्यम से महिलाओं के बढ़ते सशक्तिकरण पर प्रकाश डाला। “महिलाओं का स्वास्थ्य देश के सशक्तिकरण में योगदान देता है। जब पुरुष महिलाओं के स्वास्थ्य को समझते हैं, तो वे महिलाओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, “उन्होंने महिलाओं की भलाई के बारे में सूचित बातचीत की आवश्यकता पर जोर देते हुए टिप्पणी की।

अतिथि श्रीमती उथरा यूवी, सीयूके में महिला परामर्शदाता ने महिलाओं के स्वास्थ्य से जुड़े चिंताजनक आंकड़ों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारत में लगभग 57 प्रतिशत महिलाएं एनीमिया से पीड़ित हैं। जैविक मांगों के कारण महिलाओं को अधिक पोषण की आवश्यकता होती है और हमें अपने घरों से ही उनका सशक्तिकरण शुरू

करना चाहिए। उन्होंने मासिक धर्म के बारे में सदियों पुरानी गलत धारणाओं को खत्म करने का आह्वान किया और समाज से महिलाओं की शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं दोनों को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित किया।

नोडल अधिकारी प्रो. पवित्रा अलूर ने घर और कार्यस्थलों पर सहायक वातावरण बनाने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा, “हमें महिलाओं के स्वास्थ्य मुद्दों के बारे में खुलकर बात करनी चाहिए। बिना किसी हिचकिचाहट के उन्हें संबोधित करना एक स्वस्थ समाज का निर्माण करता है। यह हर नागरिक की जिम्मेदारी है।”

सत्र की शुरुआत डॉ. चितकला वेंकारेड्डी के हार्दिक स्वागत से हुई, जिसके बाद प्रार्थना गीत और डॉ. स्वप्निल चाफेकर द्वारा राष्ट्रगान गाया गया। देविका ने परिचयात्मक टिप्पणियाँ कीं, और भवन ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। कर्मचारियों और छात्रों ने महिलाओं के प्रति सहानुभूति, सम्मान और संवेदनशीलता को बढ़ावा देने की शपथ ली।

दो सीयूके संकाय सदस्य एरास्मस गतिशीलता कार्यक्रम में भाग लेते हैं।

4 अक्टूबर, 2025: सीयूके के वैश्विक पहुंच में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर चिह्नित करते हुए, डॉ. गोविंदोला महेंद्र, अध्यक्ष और एसोसिएट प्रोफेसर, और डॉ. डी गौतम, एसोसिएट प्रोफेसर, पर्यटन एवं होटल प्रबंधन विभाग को लातविया स्थित विड्जेम यूनिवर्सिटी ऑफ एप्लाइड साइंसेज (वीयूएस) में एरास्मस स्टाफ मोबिलिटी प्रोग्राम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया है। 4 से 21 अक्टूबर, 2025 तक निर्धारित यह कार्यक्रम सीयूके के बढ़ते अंतरराष्ट्रीय पदचिह्न को दर्शाता है। यात्रा के दौरान, संकाय सदस्य प्रतिष्ठित ईओयूईएस² विज्ञान महोत्सव और 13-17 अक्टूबर, 2025 से 5वें अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन में सीयूके का प्रतिनिधित्व करेंगे।

वे अनुसंधान पत्र प्रस्तुत करेंगे, पर्यटन और संबद्ध क्षेत्रों में स्नातकोत्तर छात्रों को व्याख्यान देंगे और शैक्षणिक आदान-प्रदान में भाग लेंगे। उनके यात्रा कार्यक्रम में पर्यटन प्रबंधन मॉडल, अनुसंधान पद्धतियों और वैज्ञानिक लेखन में सर्वोत्तम प्रथाओं का अध्ययन करने के लिए यूरोप भर में भ्रमण और क्षेत्र का दौरा भी शामिल है - मूल्यवान अंतर्दृष्टि जो सीयूके के शैक्षणिक पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने में मदद करेगी। माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने इस उपलब्धि के लिए संकाय सदस्यों को बधाई दी।



कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार और डीन प्रो. पांडुरंगा वी. पत्ती ने अपना समर्थन और सराहना व्यक्त करते हुए विश्वास व्यक्त किया कि यह यात्रा भविष्य की अंतरराष्ट्रीय साझेदारी का मार्ग प्रशस्त करेगी। भाग लेने वाले संकाय सदस्यों ने इस समृद्ध शैक्षणिक यात्रा को सक्षम करने के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन और विड्जेम विश्वविद्यालय के प्रति आभार व्यक्त किया। यह सहयोगात्मक उद्यम वैश्विक रूप से तैयार विद्वानों को विकसित करने और अपनी अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को मजबूत करने के लिए सीयूके के मिशन में एक और कदम है।

सीयूके में वाल्मीकि जयंती आधुनिक दुनिया के लिए नैतिकता पर प्रकाश डालती है



8 अक्टूबर, 2025: सीयूके ने महर्षि वाल्मीकि जयंती को श्रद्धा और बौद्धिक चिंतन के साथ मनाया, महान ऋषि के कालातीत मूल्यों और नैतिक शिक्षाओं का जश्न मनाते हुए। इस कार्यक्रम में संकाय, छात्र और विद्वान एक साथ आए ताकि रामायण के माध्यम से वाल्मीकि द्वारा रखी गई नैतिक नींवों पर फिर से विचार किया जा सके जो मानवता की सबसे स्थायी गाथाओं में से एक है।

माननीय कुलपति प्रो. बट्ट सत्यनारायण ने अपने अध्यक्षीय भाषण में महर्षि वाल्मीकि को “मानव जाति के लिए एक महान दूत” बताया। उन्होंने जोर देकर कहा कि रामायण मानव संबंधों, पारिवारिक मूल्यों और प्रकृति के प्रति श्रद्धा का मार्गदर्शन करना जारी रखता है। समकालीन शिक्षा में भारत के महाकाव्यों की प्रासंगिकता पर जोर देते हुए, उन्होंने कहा, “भारत को समझने के लिए, रामायण और महाभारत को पढ़ना चाहिए। ये ग्रंथ सार्वभौमिक हैं और हमारे नैतिक कम्पास को आकार देना जारी रखते हैं।” विषयगत संबोधन देते हुए, डॉ. शमला आर. ने इस बात पर प्रकाश डाला कि रामायण न केवल बुराई पर अच्छाई की विजय की कहानी है, बल्कि “धर्म की गहन खोज है।”

उन्होंने कहा कि यह महाकाव्य कर्तव्य, न्याय, करुणा, निष्ठा और मानवीय विकल्पों के परिणामों की जटिलता में उतरता है। उन्होंने रामायण के विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और सभ्यताओं पर प्रभाव को भी दर्शाया।

कुलसचिव प्रो. आरआर बिरादार ने वाल्मीकि के काम को “सद्भाव और धार्मिकता के लिए एक अस्तित्वगत मार्गदर्शिका” के रूप में वर्णित किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि वाल्मीकि की शिक्षाएं विकसित भारत @2047 के लिए परिकल्पित मूल्यों का एक अनिवार्य हिस्सा हैं, जो छात्रों को याद दिलाते हैं कि महाकाव्य उथल-पुथल से भरी दुनिया में आध्यात्मिक ज्ञान की किरण बनी हुई है। कार्यक्रम की शुरुआत समन्वयक डॉ. संगमेश द्वारा हार्दिक स्वागत के साथ हुई। डॉ. जयदेवी जंगमशेट्टी और डॉ. स्वप्निल चाफेकर ने वंदे मातरम और राष्ट्रगान का प्रतिपादन किया। आस्था ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा और सौजन्या ने कार्यक्रम का संचालन किया। उत्सव का समापन एक सामूहिक प्रतिबिंब के साथ हुआ कि वाल्मीकि का रामायण न केवल साहित्य है बल्कि एक कालातीत मार्गदर्शक है।

सीयूके ने ‘वन एक्ट, वन जजमेंट’ नाटक का मंचन किया।

10 अक्टूबर, 2025: कानून विभाग, सीयूके ने विभिन्न अदालती मामलों के ऐतिहासिक फैसलों पर नाटक प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। छात्रों ने अदालत की सुनवाई और फैसले के दृश्यों को फिर से बनाया। सभा को संबोधित करते हुए विभाग के प्रमुख और डीन डॉ. बसवराज कुबकड्डी ने कहा, ‘न्यायपालिका सुसंस्कृत मानव समाज की रक्षक है। हमें अपनी रोजमर्रा की गतिविधियों में कानून और सिद्धांतों को समझने की जरूरत है। यह कानून विभाग के छात्रों की जिम्मेदारी है कि वे समाज को सही संदेश भेजें।’

कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अनंत डी. चिंचुरे ने कहा, “अदालत के दृश्यों को फिर से बनाते हुए प्रदर्शन से कानून के छात्रों को अदालती मामलों के बारे में जागृत किया जाएगा और वर्तमान संदर्भ में एक सामाजिक संदेश भी भेजा जाएगा। समाज उच्च शैक्षणिक संस्थानों, कानून चिकित्सकों और छात्रों का बारीकी से निरीक्षण करता है। इसलिए, कानून के छात्रों को समाज में समझदारी से कार्य करना होगा। लक्ष्मी बनाम यूनिन ऑफ इंडिया (2014), अमन काचरू केस (2009), और डीके पर आधारित तीन प्रदर्शन। बसु बनाम पश्चिम बंगाल राज्य (1997), कानून विभाग के छात्रों द्वारा अधिनियमित किया गया था। डॉ. जयंत बुरुआ ने टिप्पणी की।

मीनाक्षी शर्मा ने सभा का स्वागत किया। प्रज्वलिता भारद्वाज ने वंदे मातरम और राष्ट्रगान का प्रतिपादन किया। वसगाह शफकत ने सत्र का संचालन किया। पावेल ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। कार्यक्रम में जूरी सदस्य डॉ. रेणुका गुब्बेवाड़, डॉ. प्रकाश बालिकाई, डॉ. किरण गाजनूर, डॉ. शिवा, अनुसंधान विद्वान और विभिन्न विभागों के छात्र उपस्थित थे।



सावधानीपूर्वक खाओ, दयालुता से जियो: सीयूके के कुलपति



16 अक्टूबर, 2025: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने कहा कि छात्रों के लिए समय की मांग है कि वे अच्छा खाना खाएं और छात्र जीवन के एक ही पक्ष में अध्ययन करते समय एक-दूसरे के साथ देखभाल करें। कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की पहल के हिस्से के रूप में आयोजित एक राष्ट्रव्यापी अभियान 'स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान' के समापन समारोह का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि यदि हम परिवेश को स्वच्छ रखते हैं तो स्वास्थ्य हमारी संपत्ति है। जब पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है, तो हम अस्वस्थ हो जाते हैं। जीवन में स्थिति कितनी भी कठिन क्यों न हो, आपको इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार करना होगा और जीवन में अपने लक्ष्यों के लिए प्रयास करना होगा। अपनी सेहत का ख्याल रखना। मानसिक स्वास्थ्य शारीरिक स्वास्थ्य की नींव है। जंक फूड से बचें और स्थानीय और मौसमी खाना खाएं। डॉ. अंगडी ने जीवन के विभिन्न चरणों में महिलाओं और युवाओं के सामने आने वाले स्वास्थ्य मुद्दों के बारे में बताया।

उन्होंने महिलाओं के कल्याण के लिए उपलब्ध टीकों और टीकाकरण पर छात्राओं से बातचीत की। अंत में, उन्होंने नियमित रूप से व्यायाम करने और स्वस्थ जीवन शैली बनाए रखने की सलाह दी। कार्यक्रम समन्वयक प्रो. पवित्रा अलूर ने स्वच्छ नारी सशक्त परिवार अभियान के तहत कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला पर एक विस्तृत रिपोर्ट पढ़ी। इस अवसर पर छात्रों और शिक्षकों को प्रशंसा पत्र भी वितरित किए गए। स्वप्निल चाफेकर ने स्वागत गीत गाया। डॉ. माधुरी ने स्वागत भाषण दिया, डॉ. रेणुका एल नायक ने अतिथियों का परिचय दिया। अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण केंद्र के अनिल बी कांबले ने कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। डॉ. भावना ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। डॉ. ज्योति तेगनूर, डॉ. रघुनाथ, डॉ. आर.एस. कार्यक्रम में चितकला वी, डॉ. राजश्री, डॉ. रेणुका एल. नायक, डॉ. विजयेंद्र, डॉ. जयलक्ष्मी और विभिन्न विभागों के सैकड़ों छात्रों ने भाग लिया।

सीयूके के छात्रों द्वारा राष्ट्रीय अध्ययन दौरा

16 अक्टूबर, 2025: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के पर्यटन और होटल प्रबंधन विभाग ने अपने शैक्षणिक पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में 28 सितंबर से 11 अक्टूबर तक दूसरे वर्ष के एमबीए पर्यटन और यात्रा प्रबंधन छात्रों के लिए एक राष्ट्रीय अध्ययन दौरे का आयोजन किया। इस दौरे में अहमदाबाद (गुजरात), जयपुर (राजस्थान), आगरा (उत्तर प्रदेश), अमृतसर (पंजाब), देहरादून (उत्तराखंड) और दिल्ली जैसे छह राज्यों में प्रमुख पर्यटन स्थलों को कवर किया गया।

इस अध्ययन यात्रा का प्राथमिक उद्देश्य छात्रों को पर्यटन के क्षेत्र में व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना था, जिसमें सतत पर्यटन विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया। यात्रा के दौरान छात्रों ने स्थानीय हितधारकों जैसे पर्यटन अधिकारियों, उद्यमियों और सेवा प्रदाताओं से बातचीत की जिससे भारत में पर्यटन को आकार देने वाले सर्वोत्तम तौर-तरीकों, चुनौतियों और नवाचारों पर बहुमूल्य जानकारी प्राप्त हुई। इस अनुभववात्मक शिक्षण पहल का उद्देश्य सैद्धांतिक ज्ञान को वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों से जोड़ना था और यह छात्रों की टिप्पणियों और सीख पर आधारित एक व्यापक रिपोर्ट में परिणत होगा। इस दौरे को माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया, जिन्होंने व्यावहारिक शिक्षा को बढ़ावा देने में विभाग के प्रयासों की सराहना की।



डॉ. महेन्द्र गाविनोला, विभागाध्यक्ष और प्रो. पांडुरंगा वी. पत्ती ने छात्रों की उत्साहपूर्ण भागीदारी और कार्यक्रम के सफल आयोजन की सराहना की। संकाय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार टीजी और डॉ. नटराज ने पूरे दौरे के दौरान छात्रों का मार्गदर्शन किया।

सीयूके मिथक, इतिहास और नाट्यकला पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की मेजबानी करता है।



अक्टूबर 17, 2025: “अंग्रेजी विभाग, कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय, कलबुर्गी, 2 और 3 दिसंबर 2025 को “नाटक और थिएटर में मिथक, इतिहास और परंपरा” पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन कर रहा है।” सम्मेलन का उद्देश्य पेपर प्रस्तुतियों, पैनल चर्चाओं और शास्त्रीय और समकालीन नाट्य कार्यों के केस स्टडी विश्लेषण के माध्यम से समृद्ध शैक्षणिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना है। थिएटर स्मृति, पहचान, आघात, प्रतिरोध और सांस्कृतिक विरासत के साथ कैसे जुड़ा है, इस पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। अंतःविषय दृष्टिकोण और अंतर-सांस्कृतिक संवादों के माध्यम से, सम्मेलन इस बात की जांच करेगा कि मिथक और इतिहास रूपक और नाटकीय कहानियों को कैसे सूचित करते हैं। यह राजनीतिक टिप्पणी और सामाजिक आलोचना के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में थिएटर की भूमिका की भी जांच करेगा, विशेष रूप से आधुनिक और उत्तर-औपनिवेशिक संदर्भों में।

शेक्सपियर इंस्टीट्यूट (यूके) के निदेशक डेविड शाल्कवायक, रोम विश्वविद्यालय टोर वर्गाटा, प्रो. धनंजय सिंह, आईसीएसएसआर, डॉ. खगेन्द्र आचार्य, काठमांडू विश्वविद्यालय, प्रो. अमितकुमार, ईएफएलयू हैदराबाद, प्रो. संध्या तिवारी, कश्मीर केंद्रीय विश्वविद्यालय और अन्य प्रतिष्ठित वक्ता बातचीत करेंगे। प्रो. बट्टू सत्यनारायण, माननीय कुलपति, ने ब्रोशर जारी किया और कहा, “भारतीय थिएटर की एक समृद्ध विरासत है, और प्रदर्शन हमें जीवित रखते हैं। यह मानव जीवन का सबसे यथार्थवादी और प्रभावी प्रतिनिधित्व है।” उन्होंने शैक्षणिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देने में विभाग के प्रयासों की सराहना की। कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादर, डीन प्रो. विक्रम विसाजी, प्रमुख प्रो. बसवराज डोनूर, और आयोजन सचिव डॉ. रेणुका एल. नायक और श्री महेंद्र एम उपस्थित थे। विद्वानों, शोधकर्ताओं और अभ्यासकों को भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

सीयूके में ब्रेस्ट कैंसर जागरूकता कार्यक्रम

अक्टूबर 30, 2025: सीयूके ने ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज के सहयोग से 29 अक्टूबर, 2025 को कैंसर जागरूकता माह के एक भाग के रूप में एक स्तन कैंसर जागरूकता कार्यक्रम और स्क्रीनिंग शिविर का आयोजन किया। समारोह को संबोधित करते हुए कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादर ने अस्वास्थ्यकर आहार, शराब की खपत, तनाव में वृद्धि, शारीरिक व्यायाम की कमी सहित जीवन शैली में बदलाव के कारण शहरी युवा महिलाओं के बीच स्तन कैंसर के बढ़ते प्रभाव पर प्रकाश डाला। उन्होंने नियमित स्वास्थ्य जांच, प्रारंभिक निदान और त्वरित उपचार पहल के महत्व पर जोर दिया। इसके अलावा, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि एक विकसित राष्ट्र के निर्माण में महिलाओं का स्वास्थ्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। मुख्य अतिथि ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज, कलबुर्गी के पैथोलॉजी विभाग के निदेशक और प्रमुख डॉ. श्रीनिवास मूर्ति ने शीघ्र निदान की सुविधा के लिए नियमित स्क्रीनिंग और स्व-परीक्षा के महत्व पर जोर दिया, जिससे उत्तरजीविता दरों में काफी सुधार होता है। सम्मानित अतिथि डॉ. प्रियांका ने महिलाओं के बीच स्तन कैंसर के लक्षणों के लिए नियमित स्वास्थ्य जांच और सतर्कता के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय में स्वास्थ्य के प्रति जागरूक वातावरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

“स्वास्थ्य ही धन है। खुशहाल ज़िंदगी जीने के लिए महिलाओं को अपनी सेहत को प्राथमिकता देनी चाहिए।”



कार्यक्रम समन्वयक डॉ. रेणुका नाइक ने 30 वर्ष से अधिक आयु की युवा लड़कियों और महिलाओं को नियमित रूप से खुद की जांच करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. ज्योति तेगनूर, चिकित्सा अधिकारी, सीयूके, ने परिचयात्मक टिप्पणी की और विभिन्न प्रकार के कैंसर और उनके निवारक उपायों के बारे में बात की। उन्होंने कहा, “हर गांठ या निशान कैंसर नहीं है; डर जाने के बजाय, किसी को डॉक्टर से परामर्श करना चाहिए।

सीयूके में आयोजित “युगधर्म: न्याय शास्त्र को डिजिटल युग की मांगों के साथ संरेखित करना” पर एक दिवसीय सम्मेलन

7 नवंबर, 2025: भारत के विधि आयोग के अध्यक्ष और भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश माननीय न्यायमूर्ति दिनेश महेश्वरी ने विधि विभाग, सीयूके द्वारा आयोजित “डिजिटल युग की मांगों के साथ न्याय शास्त्र को संरेखित करना” विषय पर एक दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन किया। उन्होंने भारतीय न्याय शास्त्र की मजबूत नींव पर प्रकाश डाला और डिजिटल युग के लिए इसे अपडेट करने की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रौद्योगिकी में नैतिकता पर जोर देते हुए, उन्होंने नवाचार और विनियमन, पारदर्शिता और गोपनीयता के बीच तनाव पर ध्यान दिया। उन्होंने कहा कि एआई को कभी भी प्रामाणिक मानव बुद्धि की जगह नहीं लेनी चाहिए। उड़ीसा के उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति कृष्ण एस दीक्षित ने इस बात पर जोर दिया कि भारतीय मूल्य सच्चाई में निहित हैं और भारत की समावेशी सांस्कृतिक विरासत की प्रशंसा करते हैं। वैश्विक उदाहरणों का हवाला देते हुए, उन्होंने कहा कि भारत का संविधान अपनी मूल्य प्रणालियों के कारण मजबूत बना हुआ है। माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण पर बात की, जिसमें अच्छी तरह से प्रशिक्षित अधिवक्ताओं और न्यायाधीशों द्वारा समर्थित एक मजबूत कानूनी प्रणाली की आवश्यकता को रेखांकित किया गया। उन्होंने न्याय, धर्म और अर्थशास्त्र के साथ आधुनिक प्रौद्योगिकी के एकीकरण पर जोर दिया और नए पांच साल के बीए एलएलबी और एलएलएम कार्यक्रमों की घोषणा की।

शुरुआत में डीन प्रो. बसवराज कुबकड्डी ने सभा का स्वागत किया; डॉ जयंत बुरुवा ने परिचयात्मक टिप्पणी की; मिस रागिनी ने संचालन किया; और डॉ अनंत चिंचुरे ने

धन्यवाद प्रस्ताव रखा। राष्ट्रीय गीत और गान डॉ. जयदेवी जंगमशेट्टी, डॉ. रविकिरन नाकोड़ और डॉ. स्वनील चाफेकर द्वारा प्रस्तुत किया गया था। प्रभारी कुलसचिव प्रो. चन्नवीर आर. एम., ट्रस्टीगण, संकाय सदस्य, प्रतिनिधि और छात्र उपस्थित थे।



भारत सर्वेक्षण और सीयूके के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर।

13 नवंबर, 2025: भारतीय सर्वेक्षण के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के बाद सीयूके के माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने कहा, “राष्ट्रीय विकास के लिए शिक्षाविदों, अनुसंधान संस्थानों और उद्योगों का एक साथ मिलकर काम करना समय की मांग है।” उन्होंने अंतःविषय और बहु-विषयक अनुसंधान के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि समझौता ज्ञापन से भूगोल, भूविज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान, ईसीई और भौतिकी जैसे विभागों को लाभ होगा। उन्होंने कहा कि व्यावहारिक, उद्योग के लिए तैयार कौशल आज की ज्ञान अर्थव्यवस्था में आवश्यक हैं और यह छात्रों को हाथों पर सीखने का अवसर प्रदान करेगा तथा विद्वानों एवं शिक्षकों के लिए शोध के अवसर उपलब्ध कराएगा। कर्नाटक भू-स्थानिक निदेशालय के निदेशक श्री अवनीश कुमार ने कहा कि संगठन भारत का सबसे पुराना वैज्ञानिक विभाग है। उन्होंने कहा कि यह राष्ट्रीय विकास और संप्रभुता

को मजबूत करने के लिए राष्ट्रीय भूस्थानिक नीति- 2022 के तहत आधारभूत भूस्थानिक डेटा तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कार्यवाही शुरू करने के लिए, विश्वविद्यालय-उद्योग केंद्र के निदेशक प्रो. विजयकुमार ने बताया कि समझौता ज्ञापन संयुक्त परियोजना प्रस्तावों को बढ़ावा देगा, तकनीकी विशेषज्ञता का आदान-प्रदान, कार्यशालाएं, छात्र इंटरशिप, सह-लेखक प्रकाशन और अनुसंधान बुनियादी ढांचे के साझा उपयोग को बढ़ावा देगा। यह भारतीय सर्वेक्षण के विशेषज्ञों के समर्थन से भू-सूचना विज्ञान, रिमोट सेंसिंग, जीएनएस, कार्टोग्राफी और सर्वेक्षण में पाठ्यक्रम के विकास का भी समर्थन करेगा। नोडल अधिकारी, डॉ. महालिंगम ने धन्यवाद ज्ञापन किया। भारतीय सर्वेक्षण विभाग के अधिकारी और सीयूके संकाय सदस्य उपस्थित थे।



पुस्तकालय स्वचालन और आरएफआईडी कार्यशाला के लिए कुलपति ने विवरणिका जारी की।



13 नवंबर, 2025: केंद्रीय पुस्तकालय, कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय कलबुर्गी में राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। डॉ एस आर रंगनाथन हॉल, सेंट्रल लाइब्रेरी, सीयूके में 5 दिसंबर 2025 को आयोजित की जाएगी। केंद्रीय पुस्तकालय के पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ पी एस कट्टिमनी ने कहा कि यह कार्यशाला 'लाइब्रेरी ऑटोमेशन और आरएफआईडी प्रौद्योगिकियों पर आधारित होगी।' पुस्तकालय स्वचालन, आरएफआईडी आधारित एक्सेस प्रबंधन और कोहा जैसे ओपन-सोर्स लाइब्रेरी सॉफ्टवेयर का समर्थन करने वाली प्रौद्योगिकियों, स्वचालित पुस्तकालय प्रणालियों के प्रभावी प्रबंधन के लिए नवीनतम तकनीकी कौशल के साथ पुस्तकालय पेशेवरों को सुसज्जित करती हैं। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम में इन क्षेत्रों में प्रसिद्ध विशेषज्ञों, पेशेवरों और डेवलपर्स द्वारा आयोजित किए जाने वाले कोहा सॉफ्टवेयर और आरएफआईडी प्रौद्योगिकियों के व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र और प्रदर्शन होंगे।

यह कार्यक्रम आरएफआईडी एकीकरण, कोहा अनुकूलन, परिसंचरण और कैटलॉगिंग मॉड्यूल और पुस्तकालय सेवाओं में स्वचालन के वास्तविक समय के अनुप्रयोगों जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करेगा। भारत भर के विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और अनुसंधान संस्थानों से पुस्तकालय पेशेवर, शिक्षाविद और छात्र भाग लेने की उम्मीद है। यह कार्यक्रम डिजिटल लाइब्रेरी प्रबंधन में पेशेवर नेटवर्किंग और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करेगा। कार्यशाला का आयोजन प्रो. बट्टू सत्यनारायण, माननीय कुलपति, सीयूके, प्रो. आर आर बिरादार, कुलसचिव, सीयूके, डॉ. पी एस कट्टिमनी, विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष और संयोजक और डॉ. सतीश वी तोटर, उप पुस्तकालयाध्यक्ष के मार्गदर्शन में केंद्रीय पुस्तकालय टीम के साथ किया जा रहा है।

सीयूके में आयोजित “इंस्टेंट बेवरेजेज फॉर ए हेल्दी लाइफस्टाइल” पर एक विशेष व्याख्यान

19 नवंबर, 2025: वाणिज्य विभाग द्वारा आयोजित “इंस्टेंट बेवरेजेज फॉर ए हेल्दी लाइफस्टाइल” पर एक कार्यक्रम में सीयूके के कुलसचिव प्रो. र आर आर बिरादार ने कहा, “स्वस्थ लोग एक राष्ट्र की सच्ची संपत्ति हैं।” उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत को अस्वास्थ्यकर खाने, तनाव और व्यायाम की कमी के कारण मधुमेह, बीपी, कैंसर और दिल के दौरे के बढ़ते मामलों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने छात्रों से पौष्टिक भोजन की आदतों, नियमित शारीरिक गतिविधि, योग और ध्यान को अपनाने का आग्रह किया, यह कहते हुए कि स्वास्थ्य - भौतिक धन नहीं - विकसित भारत 2047 को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है। श्री अनिल कुमार कदडी, संस्थापक और निदेशक बुयू फूड प्रा. लिमिटेड ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कितने वाणिज्यिक पेय में अतिरिक्त चीनी और परिरक्षक होते हैं। उन्होंने बताया कि बुयू फूड सुरक्षित और प्रमाणित तरीकों का उपयोग करते हुए फल के रस के साथ बाओबाब, रोसेला, मोरिंगा और पपीता पत्ती पाउडर जैसे 41 प्राकृतिक, स्वस्थ उत्पादों का उत्पादन करता है। प्रो. पांडुरंगा वी. पत्ती ने सभा का स्वागत किया, मिस कोमल ने कार्यक्रम की संचालन की और मल्लिकार्जुन ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संकाय सदस्य और छात्र उपस्थित थे।



राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह का आयोजन, दिनांक 14 से 20 नवंबर 2025 तक



21 नवंबर, 2025: केंद्रीय पुस्तकालय ने राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह को बड़े उत्साह और छात्रों, संकाय सदस्यों और कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी के साथ मनाया। सप्ताह भर चलने वाले समारोह का उद्देश्य ज्ञान को बढ़ावा देने, शैक्षणिक उत्कृष्टता का समर्थन करने और विश्वविद्यालय समुदाय के बीच आजीवन सीखने को प्रोत्साहित करने में पुस्तकालयों के महत्व को बढ़ावा देना था। समारोह के हिस्से के रूप में, डिजिटल डेटाबेस, ई-संसाधन, अनुसंधान सहायता उपकरण और छात्र-केंद्रित सुविधाओं सहित केंद्रीय पुस्तकालय द्वारा पेश किए गए संसाधनों और सेवाओं की विस्तृत श्रृंखला को उजागर करने के लिए विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम, प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

उन्होंने छात्रों और संकाय को पुस्तकालय के डिजिटल और प्रिंट संसाधनों का व्यापक उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया, और स्कोपस डेटाबेस, टर्निटिन और वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन जैसी पहलों के महत्व पर भी जोर दिया, जो पुस्तकालय सेवाओं की दक्षता और पहुंच को बढ़ाने में योगदान करते हैं। इसके अलावा, उन्होंने कहा कि पुस्तकालय ज्ञान का खजाना है। पुस्तकालय में अधिक समय बिताने और अधिक पाठ्यपुस्तकें पढ़ने से छात्रों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर भरोसा न करें; प्रामाणिक जानकारी केवल किताबों, विश्वकोश, शब्दकोशों और अन्य विश्वसनीय स्रोतों के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। माननीय कुलपति ने प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करने वाले सभी छात्रों के साथ-साथ प्रतिभागियों को भी बधाई दी।

डॉ पी एस कट्टिमनी विश्वविद्यालय के लाइब्रेरियन ने अतिथियों का स्वागत किया और राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह मनाने के महत्व पर प्रकाश डाला तथा छात्रों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों को आकर्षित करने वाले प्रतियोगिताओं व गतिविधियों की जानकारी दी। इस कार्यक्रम में माननीय कुलपति, प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने भाग लिया, जिन्होंने उच्च शिक्षा संस्थानों की बौद्धिक संस्कृति को आकार देने में पुस्तकालयों की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने विश्वविद्यालय समुदाय की विविध शैक्षणिक और अनुसंधान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपनी सेवाओं को लगातार उन्नत करने, आधुनिक तकनीकों को अपनाने और उपयोगकर्ता के अनुकूल सुविधाएं प्रदान करने में केंद्रीय पुस्तकालय के प्रयासों की सराहना की।

बाद में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने कहा कि आज के आधुनिक प्रौद्योगिकी युग में हमारी उंगलियों पर सभी प्रकार की जानकारी उपलब्ध है, लेकिन पुस्तकालय में पुस्तकों का अध्ययन अभी भी एक अच्छे व्यक्तित्व के निर्माण में फायदेमंद है। सोशल मीडिया का उपयोग एक सीमा तक फायदेमंद है लेकिन वह सटीक ज्ञान और शक्ति प्रदान नहीं कर सकता जो किताबें प्रदान करती हैं। इस अवसर पर पृथ्वी विज्ञान के डीन प्रो. एम. प्रशांत ने कहा कि पुस्तकों को पढ़ने में रुचि विकसित करनी चाहिए। श्री राजकुमार कल्याणी ने कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ. सतीश तोटर, उप पुस्तकालयाध्यक्ष, ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विभिन्न विभागों के डीन और अध्यक्ष, पुस्तकालय कर्मचारी, संकाय सदस्य और विभिन्न विभागों के शोधार्थी और छात्र उपस्थित थे।

सीयूके में जनजातीय गौरव दिवस मनाया गया

22 नवंबर, 2025: भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर सीयूके में जनजातीय गौरव दिवस समारोह के दौरान आईजीएनटीयू, मध्य प्रदेश के प्रो. एम. टी. वी. नागराजू ने कहा, "आदिवासी समुदाय भारत के शुरुआती स्वतंत्रता सेनानियों में से एक हैं। उन्होंने तिलक मांडवी, डोरा और चक्र बिसोई, सिद्धू और कान्हू मुर्मू, बिरसा मुंडा, जात्रा भगत, अल्लूरी सीताराम राजू, कोमाराम भीम, कनकलता बरुआ और रानी गैदिन्लियू जैसे गुमनाम आदिवासी नायकों के बलिदान पर प्रकाश डाला, जिन्होंने ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ अपने समुदायों को एकजुट किया और जल, जमिन और जंगल का बचाव किया। उन्होंने शैक्षिक पाठ्यक्रम में उनकी कहानियों को शामिल करने की आवश्यकता पर बल दिया। माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि जनजातीय प्रतिरोध इतना मजबूत था कि अंग्रेजों ने अपनी भूमि के लिए सुरक्षात्मक कानून बनाए। उन्होंने संविधान के तहत समान अवसरों, आदिवासी समुदायों के नेताओं के उदय और खाद्यान्न आयातक से उभरती आर्थिक शक्ति तक भारत की यात्रा पर जोर दिया। उन्होंने सभी से राष्ट्रीय संप्रभुता को बनाए रखने और यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि विकास समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। डॉ. संगमेश ने सभा का स्वागत किया; डॉ. गौतम डी ने वर्ष भर चलने वाले समारोहों का विवरण प्रस्तुत किया; थॉक्सपा संगतम और आस्था पाठक ने कार्यक्रम का संचालन किया; और डॉ. शमला आर ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रतियोगिता विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। इस कार्यक्रम में संकाय सदस्यों और छात्रों ने भाग लिया।

सीयूके के कुलसचिव प्रो. आर आर बिरादार को सीयूके शिक्षकों द्वारा सम्मानित किया गया

25 नवंबर, 2025: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. आर आर बिरादार को सीयूके के पर्यटन और होटल प्रबंधन, वाणिज्य और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभागों के संकाय सदस्यों ने हाल ही में पीआईएसए, इटली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में इकोनोमिक बेनिफिट्स ऑफ़ माइक्रोफॉसिल्स इन आयल एक्सप्लोरेशन इन इंडिया: ए केस स्टडी ऑफ़ ओएनजीसी पर एक शोध पत्र प्रस्तुत करने के लिए और सीएमडीआर, धारवाड़ से पब्लिक इकोनॉमिक्स में अपना दूसरा पीएच डी पूरा करने के लिए सम्मानित किया गया। इन विभागों के सदस्यों ने एक अच्छे प्रशासक के साथ-साथ एक उत्कृष्ट शोधकर्ता दोनों के रूप में सेवाओं के कुशल निर्वहन के लिए कुलसचिव की सराहना की। प्रशासनिक और शैक्षणिक दोनों गतिविधियाँ करना एक बहुत ही कठिन कार्य है। हाल ही में, प्रो. बिरादार को केयूडी और सीयूके में प्रशासनिक जिम्मेदारियों के साथ-साथ शिक्षण और अनुसंधान में उनके 25 वर्षों के योगदान के लिए कर्नाटक राज्य शैक्षिक संस्थान कर्मचारी संघ, बेंगलुरु द्वारा सर्वश्रेष्ठ शिक्षक जेम पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। इस अवसर पर प्रो. पांडुरंगा वी पत्ती, डॉ. गौतम डी, डॉ. जगदीश बिरादार, डॉ. उदय पाटिल और डॉ. संगमेश उपस्थित थे।



सीयूके में 'संविधान दिवस' मनाया गया



26 नवंबर, 2025: कलबुरगी के तीसरे अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश माननीय श्री चेन्नप्पा गौड़ा ने कहा, "कानून के छात्रों को भारत के संविधान का संरक्षक होना चाहिए। उन्हें नियमों का पालन करना चाहिए और समाज और नागरिकों के हितों की रक्षा करनी चाहिए।" वह जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, कलबुरगी के सहयोग से सीयूके, कलबुरगी में संविधान दिवस समारोह के अवसर पर बोल रहे थे। संविधान के महत्व पर चर्चा करते हुए, उन्होंने डॉ. बी. आर. अंबेडकर का उद्धरण दिया: "संविधान में निहित संवैधानिक उपाय संविधान का हृदय और आत्मा हैं।" उन्होंने आगे कहा कि "संविधान भारत के सभी कानूनों की जननी है, और सरकार की तीन शाखाएं, यानी न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका, संविधान के अनुसार काम करेंगी।" उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि न्यायपालिका ने भारतीय संविधान की प्रकृति की रक्षा के लिए बुनियादी ढांचे के सिद्धांतों को कैसे निर्धारित किया है। श्री श्रीनिवास नवले, वरिष्ठ सिविल न्यायाधीश और सचिव, जिला कानूनी सेवा प्राधिकरण, कलबुरगी ने कानून के छात्रों से समाज सेवा की भावना विकसित करने और आवाज रहित होने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, "संविधान का उद्देश्य भेदभाव से बचना, शांति फैलाना और समानता बनाए रखना है।"

कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. आर आर बिरादार ने कहा, "संविधान दिवस का उत्सव कानून के प्रति जागरूकता पैदा करने और 2047 तक विकसित भारत प्राप्त करने के लिए दिमागों को प्रज्वलित करने में महत्वपूर्ण है।" अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में, कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने कहा, "भारत का संविधान प्रणाली की एंट्रॉपी को नियंत्रित करता है। 140 करोड़ की आबादी वाले देश में, कल्पना कीजिए कि अगर हम नियमों का पालन नहीं करते हैं तो क्या होगा। हम सभी के लिए सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए कानूनों का पालन करना महत्वपूर्ण है। अपने कर्तव्यों को पूरा किए बिना, हमारे अधिकारों के लिए लड़ना अनुचित है।" स्कूल ऑफ़ लीगल स्टडीज के डीन डॉ. बसवराज एम. कुबकडु ने परिचयात्मक टिप्पणी की और सभा का स्वागत किया। डॉ. रेणुका गुब्बेवाड़ और डॉ. जयंत बोरुआ ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर डीन, अध्यक्ष, कर्मचारी सदस्य और छात्र उपस्थित थे।

सीयूके में खेल सुविधाओं का उद्घाटन



27 नवंबर, 2025: सीयूके के माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने कहा, "हमारे छात्रों को स्वस्थ और फिट बनाने के लिए खेल सुविधाएं बहुत महत्वपूर्ण हैं। वह क्रिकेट प्रैक्टिस नेट, बैडमिंटन कोर्ट और शटल बैडमिंटन कोर्ट के उद्घाटन के बाद बोल रहे थे। उन्होंने आगे कहा, "400 मीटर की दौड़ की पटरियों और हेंडबॉल कोर्ट का निर्माण प्रक्रिया में है; जल्द ही वे चालू हो जाएंगे। हमारे पास पहले से ही एक क्रिकेट ग्राउंड, बास्केटबॉल कोर्ट, फुटबॉल फील्ड और परिसर में एक परिष्कृत जिम और फिटनेस सेंटर है। मैं छात्रों को सलाह देता हूं कि वे अपने स्वास्थ्य और फिटनेस को बनाए रखने के लिए इन सुविधाओं का उपयोग करें। हम उम्मीद करते हैं कि हमारे छात्र राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों में भाग लेंगे और विश्वविद्यालय के साथ-साथ देश के लिए भी नाम और प्रसिद्धि लाएंगे।" इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. आर आर बिरादार, निदेशक शारीरिक शिक्षा प्रो. एम एस पसोदी, सीओई डॉ. कोटा साई कृष्ण, वित्त अधिकारी रामादोराई, प्रो. बसवराज डोणूर, प्रो. जी आर अंगडी, डॉ. बसवराज कुबकड्डी, डॉ. वीरेश कसबेगौड़र, डॉ. पी एस कट्टीमणि, डॉ. शमला आर, शिक्षक और छात्र उपस्थित थे।



फोटो गैलरी



सीयूके में हिन्दी पखवाड़ा 2025 मनाया गया



पर्यटन और सतत परिवर्तन पर एक दिवसीय संगोष्ठी



सीयूके के सभी कर्मचारियों के लिए राष्ट्रीय कर्मयोगी प्रशिक्षण सत्र



सीयूके में दशहरा उत्सव

फोटो गैलरी



छात्रों के परिवहन के लिए ईवी वाहन



भूकंप पूर्वानुमान पर विशेष व्याख्यान।



सीयूके ने इंफोसिस स्प्रींगबोर्ड के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए



सीयूके में रक्तदान शिविर



सीयूके अहिंसा के अंतर्राष्ट्रीय दिवस का जश्न मनाता है

फोटो गैलरी



सीयूके रिंग रोड स्ट्रीट लाइट पोल का उद्घाटन



सीयूके में संरक्षणवाद की राजनीति पर विशेष व्याख्यान



सीयूके में सतर्कता जागरूकता कार्यक्रम



साइबर सुरक्षा पर जागरूकता वार्ता



सीयूके ने मनाया फिट इंडिया वीक का जश्न



बड़ा सपना देखो, चुनौती स्वीकार करो, राष्ट्र की सेवा करो

“शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।”
—नेल्सन मंडेला



आपकी भागीदारी की अपेक्षा है।

संपादकीय टीम

मुख्य संपादक: प्रो. बट्ट सत्यनारायण, माननीय कुलपति, सीयूके
संपादक: डॉ. ओईनाम बेदाजीत मैतेई; एसोसिएट संपादक: डॉ. के. कार्तिक, डॉ. रूपा रानी सोनोवाल, डॉ. दीप्ति; प्रेस विज्ञप्ति: डॉ. गणपति बी सिनूर; हिंदी अनुवाद: डॉ. रेशमा एल. नदाफ छात्र संपादक: इंदुजा मजूमदार और पद्मजा पी जी
प्रकाशक: प्रो. आर. आर. बिरादार, कुलसचिव, सीयूके



कृपया सीयूके बुलेटिन में फीचर करने के लिए विभागीय घटनाओं/उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण ईमेल: bulletin@cuk.ac.in पर भेजें।